रहस्य संदेश

RNI. NO. UPHIN/2007/20715

23, एटा से प्रकाशित, सोमवार, 23 जनवरी, 2023 पृष्ठ : 8

सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाए किसान, करें उचित प्रबंधन – डा.एसके विश्वास

(अनवर अशरफ)। कानपुर (रहस्य संदेश) चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ एसके विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है। डॉ विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनो, पत्तियों, फूलों एवं नई फलियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 0.03: घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में 2: नीम के तेल को तरल साबुन के साथ(20 मिलीलीटर नीम का तेल 1 मिलीलीटर तरल साबुन) में मिलाकर छिड़काव करें। डॉक्टर विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे–छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं। जो बाद में तेजी से बढ़ कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं।उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरुप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं। यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाईथेंन एम–45 का 0.2: घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ खलील खान ने किसानों से अपील की है कि वे अपनी सरसों की फसल की निगरानी अवश्य करते रहें। क्योंकि आसमान में बादल छाए रहने से सत्व फसल में कीट और रोग आने की संभावना बढ़ जाती है। फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंधन करें। जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

अधिकतम तापमान 24.00° >> न्यूनतम तापमान 16.00° >> सूर्योदय 6:55 >> सूर्यास्त 17:40 >> डॉलर 80.98 >> यू

दैनिक भास्कर

देश का विश्वसनीय अखबार

लखनऊ | वर्ष-07, अंक-111 | सोमवार 23 जनवरी 2023 | कुल पृष्ठ 16 | मूल्य 3 .00 रुपये

सरसों की फसल को रोग और कीड़ों से बचाएं किसान : डॉ. विश्वास

भास्कर ब्यूरो

कानपुर । सीएसए के पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ एसके विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है। डॉ. विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनो, पत्तियों, फूलों एवं नई फलियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 0.03% घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक

नियंत्रण हेतु फसल में 2% नीम के तेल को तरल साबुन के साथ(20 मिलीलीटर नीम का तेल + 1 मिलीलीटर तरल साबुन) में मिलाकर छिड़काव करें। डॉक्टर विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं। जो बाद में तेजी से बढ़ कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं।उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरुप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं। यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाईथेंन एम-45 का 0.2% घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ खलील खान ने किसानों से अपील की है कि वे अपनी सरसों की फसल की निगरानी अवश्य करते रहें। क्योंकि आसमान में बादल छाए रहने से सत्व फसल में कीट और रोग आने की संभावना बढ़ जाती है। फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंधन करें। जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

राष्ट्रीय
सहारा

कानपुर • सोमवार • 23 जनवरी • 2023

ारिश से सरसों की फसल में रोगों से नुकसान का अंदेशा

ीएसए की बचाव हेतु जरूरी दवाओं के छेड़काव की सलाह

डॉ. एसके विश्वास ने सरसों फसल को रोगों से बचाने की दी सलाह।

ुर (एसएनबी)। बादलों तविधियां बढ़ने के साथ ही हुई से सरसों की फसल को न पहुंचने का अंदेशा है। इसके त सीएसए कृषि विवि ने ों को फसल की निगरानी व बचाव के लिए जरूरी दवाओं का ाव करने की सलाह दी है।

वि के पादप रोग विज्ञान विभागाध्यक्ष के विश्वास ने तिलहनी फसलों में का विशेष स्थान है। इस समय माहू या चेपा का सरसों की फसल में ण होता है। यह कीट पौधों के कोमल तनों, पत्तियों, फूलों एवं नई फलियों से रस चूसकर उसे कमजोर व क्षतिग्रस्त करते हैं। उन्होंने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 0.03 प्रतिशत घोल का छिडकाव किया जाना चाहिए। या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में 2 प्रतिशत नीम के तेल को 1 मिलीलीटर तरल साबुन में मिलाकर छिड़काव करें।

डॉ .विश्वास के अनुसार सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। इसमें सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं। बाद में तेजी से बढ़कर काले धब्बे और बड़े हो जाते हैं। फलस्वरूप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं। यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाईथेंन एम-45 का 0.2 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिनों के अंतराल पर करना चाहिए। विवि प्रवक्ता डॉ.खलील खान ने किसानों से सरसों की फसल की निगरानी रखने व फसल में रोग या कीट आने पर जरूरी उपाय करने की सलाह दी है।

सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाए किसान

डीटीएनएन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ एसके विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है। डॉ विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनो, पत्तियों, फूलों एवं नई फलियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 0.03त्न घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में 2त्न नीम के तेल को तरल साबुन के साथ(20 मिलीलीटर नीम का तेल + 1 मिलीलीटर तरल साबुन) में मिलाकर छिड़काव करें। डॉक्टर विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं। जो बाद में तेजी से बढ़ कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं।उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरुप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं। यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाईथेंन एम-45 का 0.2त्न घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ खलील खान ने किसानों से अपील की है कि वे अपनी सरसों की फसल की निगरानी अवश्य करते रहें। क्योंकि आसमान में बादल छाए रहने से सत्व फसल में कीट और रोग आने की संभावना बढ़ जाती है। फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंधन करें। जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

पेट्रोल-डीजल के जल्द घट सकते हैं दाम 12

नगर निगम की लापरवाही के चलते कभी भी हो... 10

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्ष: 14 | अंक: 103
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12
सोमवार | 23 जनवरी, 2023

बादल घिरे रहने से कीट का तेजी से होता है प्रकोप

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर। सीएसए के पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ.एस.के.विश्वास ने एडवाइजरी जारी करते हुए बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इस कीट का प्रकोप तेजी से होता है। जिसके नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 0.03 फीसदी घोल का छिड़काव करना चाहिए तथा जैविक नियंत्रण के लिए फसल में 2 फीसदी नीम के तेल को तरल साबुन के साथ 20 मिलीलीटर नीम का तेल + 1 मिलीलीटर तरल साबुन) में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए। उन्होंने बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है जिसके कारण पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं। इससे बचाव के लिए डाईथेंन एम-45 का 0.2 फीसदी घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें। डॉ.खलील खान ने किसानों से अपनी सरसों की फसल की निगरानी गर्मी की सलाह दी। उन्होंने कहा कि आसमान में बादल छाए रहने से सत्व फसल में कीट और रोग आने की संभावना बढ़ जाती है।

आज

कानपुर 23/01/2023

सरसों फसल को रोग-कीड़ों से बचायें किसान

❑ फसलों पर कीट व रोग की संभावना बढ़ी

कानपुर, 22 जनवरी। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ एसके विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव के लिए किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है। उन्होंने बताया कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनो, पत्तियों, फूलों एवं नई फलियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉ. विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में 2 प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन के साथ (20 मिलीलीटर नीम का तेल + 1 मिलीलीटर तरल साबुन) में मिलाकर छिड़काव करें। डॉक्टर विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं। जो बाद में तेजी से बढ़ कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं।उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरुप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं। यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाईथेंन एम-45 का 0.2 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें। सीएसए के मीडिया प्रभारी डॉ खलील खान ने किसानों से अपील की है कि वे अपनी सरसों की फसल की निगरानी अवश्य करते रहें। क्योंकि आसमान में बादल छाए रहने से सत्व फसल में कीट और रोग आने की संभावना बढ़ जाती है। फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंधन करें। जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

कानपुरः सरसों फसल को रोग और कीड़ों से बचाए किसान, करें उचित प्रबंधनः डॉ.एस के विश्वास

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ एस के विश्वास ने सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है। डॉ विश्वास ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनो, पत्तियों, फूलों एवं नई फलियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में 2 प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन के साथ (20 मिलीलीटर नीम का तेल + 1 मिलीलीटर तरल साबुन) में मिलाकर छिड़काव करें। डॉक्टर विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं। जो बाद में तेजी

से बढ़ कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरुप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं। यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाईथेंन एम-45 का 0.2प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ खलील खान ने किसानों से अपील की है कि वे अपनी सरसों की फसल की निगरानी अवश्य करते रहें। क्योंकि आसमान में बादल छाए रहने से सत्व फसल में कीट और रोग आने की संभावना बढ़ जाती है। फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंधन करें। जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

डॉक्टर विश्वास ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं।

दैनिक जागरण कानपुर 23/01/2023

खेतों में न भरने दें पानी, फसलों को हो सकता है नुकसान

जासं, कानपुर : सीजन की पहली वर्षा का फसलों पर भी प्रभाव नजर आएगा। मौसम विज्ञानी डा. एसएन सुनील पांडेय ने बताया कि सीमित मात्रा में वर्षा हुई तो फसलों को ज्यादा नुकसान नहीं होगा लेकिन ज्यादा वर्षा नुकसानदेय साबित हो सकती है। गेहूं की फसल के लिए तो बरसात फायदेमंद साबित होगी, लेकिन अन्य फसलों में रोग व कीट लगने की आशंका बढ़ गई है। सरसों व राई में फूल खिल रहे हैं और वर्षा से फूल झड़ने की आशंका रहती है। इसी तरह आलू व अन्य सब्जी वाली फसलों में भी पानी भरने से रोग व कीट लग सकते हैं। आम की फसल में बौर भी झड़ने की आशंका है।

सरसों पर मंडराया माहू का खतरा: वर्षा के इस मौसम में सरसों पर माहू कीट या चेपा का खतरा मंडराने लगा है। बदली छाई रहती है तो इन कीटों से बचाव के लिए तुरंत आवश्यक कदम उठाने होंगे। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा. एसके विश्वास ने किसानों को कीटनाशकों का प्रयोग करने की सलाह दी है। बताया कि इमिडाक्लोप्रिड 0.03% या 20 मिली नीम के तेल में एक मिली तरल साबुन का घोल बनाकर छिड़काव करें। डाइथेन एम-45 का 0.2% घोल के दो छिड़काव भी 15 दिन के अंतराल पर कर सकते हैं।

अमर उजाला कानपुर 23/01/2023

जापान और प्रदेश सरकार मिलकर विकसित करेंगे खेती पर आधारित मॉडल

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) और जापान के कृषि, वन एवं मत्स्य मंत्रालय के बीच हुए एमओयू के तहत विकसित होने वाले मॉडल में जापान और प्रदेश सरकार दोनों निवेश करेंगे। सीएसए के पांच हेक्टेयर क्षेत्र में तैयार होने वाले मॉडल में जापानी कंपनियां कृषि संबंधी सस्ती तकनीकें विकसित करेंगी।

शुक्रवार को सीएसए में हुई बैठक के बाद कुलपति और जापानी प्रतिनिधिमंडल की लखनऊ में वार्ता हुई। तय हुआ कि जापानी कंपनियों को ऐसी तकनीक और कृषि यंत्र लाने होंगे जो सस्ती और टिकाऊ हों ताकि किसानों को लाभ हो सके। कंपनियों की ओर से विकसित तकनीक का सीएसए के विशेषज्ञ मूल्यांकन करेंगे। 15 दिन के अंदर सीएसए, उप्र सरकार और जापान के सदस्यों की कार्यसमिति बनेगी जो आगे की योजनाओं का खाका तैयार करेगी। (संवाद)

मटर के दाने निकालने वाली मशीन की मांग

जापानी प्रतिनिधियों से मांग की गई कि वे ऐसी मशीन बनाएं जिससे कम समय में मटर की फली से दाना निकाला जा सके। इससे किसानों की आय बढ़ेगी और आम जनता को भी राहत मिलेगी।

अप्रैल से सब्जी उत्कृष्टता केंद्र कल्याणपुर से होगी शुरुआत

निदेशक शोध डॉ. विजय यादव ने बताया कि जापानियों को पहले शहर से लगभग 30 किमी दूर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के बोझा प्रक्षेत्र को दिखाया गया था। मॉडल जनता और किसानों की पहुंच तक हो इसके लिए कल्याणपुर स्थित सब्जी उत्कृष्टता केंद्र से इसकी शुरुआत अप्रैल महीने से की जाएगी।